संवादमूलक रामलीलाएँ एवं प्रदर्शन-विधान

- आशुतोष

रामलीला का अभिनय मुख्यतः दो आधार पर किया जाता है-

1. अभिनयपरक रामलीलाएँ

2. संवादमूलक रामलीलाएँ

संवादमूलक रामलीला में संवाद का पक्ष ज्यादा प्रभावी होता है। इस शैली की दो प्रमुख लीलाओं का वर्णन प्रस्तुत लेख में किया जा रहा है-

[अ] रामनगर की रामलीला रामनगर वाराणसी की यह ऐतिहासिक रामलीला आज से करीब 200 वर्षों पूर्व महाराज उदितनारायण सिंह के शासनकाल (1795-1835ई०) में प्रारंभ हुई। रामनगर की रामलीला के प्रारंभ के विषय में कई जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं, सबसे प्रचलित मान्यता है कि-

महाराज उदितनारायण जी प्रतिदिन अस्सी की रामलीला को देखने जाया करते थे। महाराज को कोई संतान नहीं थी। एक दिन महाराज दर्शन के लिए दुर्गाकुंड गए हुए थे, जहां पर तेजस्वी रामायणी रामप्रसाद जी से उनकी भेंट हुई। महाराज रामप्रसाद जी को अपने घर लेकर गए जहां पर महात्मा ने उन्हें संतानहीनता दूर करने का उपाय बताया कि 'संतो के चरणोदक से तुम्हारा कल्याण होगा और संतो को एकत्रित करने का सबसे अच्छा तरीका है कि आश्विन मास में रामलीला का आयोजन करो, उसमें आने वाले संतों के लिए भंडारा आदि का आयोजन हो।' महाराज ने रामप्रसाद जी के बताने के बाद 31 दिनों तक रामलीला का आयोजन किया, फलस्वरूप उन्हें संतान की प्राप्ति हुई या संतान रूप में ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह जी का जन्म हुआ। रामलीला का प्रारंभ कब और कैसे हुआ यह विषय स्पष्ट नहीं है। इसके बावजूद रामलीला का भव्य आयोजन ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह के समय में हुआ।

ईश्वरी प्रसाद जी बड़े रामभक्त थे और इन्होंने एक चित्र रामायण का निर्माण किया था। इनके दरबार में काष्ठजिह्वास्वामी रहते थे जिन्होंने रामचरितमानस की व्याख्या 'परिचर्या' के नाम से लिखी जिसमें 'परिशिष्ट' महाराज ईश्वरी प्रसाद ने जोड़ा। इसका प्रकाशन 'रामायण परिचर्या परिशिष्ट प्रकाश अथवा रामचरितमानस' के काशीराज संस्करण के रूप में हुआ। यह पुस्तक रामनगर की रामलीला का आधारग्रंथ है। वर्तमान दौर में भी इस बात का ध्यान रखा जाता है कि रामलीला का अभिनय इसी के आधार पर हो।

(i) कथावस्तु- रामनगर की रामलीला काशी की अन्य रामलीलाओं से समय की तुलना में लंबी है। इसका मंचन 31 दिनों तक होता है जो आश्विन मास में भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी से लेकर आश्विन शुक्ल चतुर्दशी तक चलती है। रामलीला के प्रारंभ होने से दस दिन पूर्व गणेश पूजन होता है। लीलानुकरण के पहले

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से त्रयोदशी तक रामचरितमानस के प्रारंभ से लेकर बालकांड के 'भये निसाचर सहित समाजा' तक का पाठ किया जाता है। इस स्थल तक रामकथा का प्रकरण नहीं है इसलिए इसका पाठ मात्र करवाया जाता है। अनंत चतुर्दशी को लीला का प्रारंभ होता है। गणेश पूजन, स्वरूप पूजन और वाद्य यंत्र पूजन के बाद मुहूर्त के अनुसार पहले दिन सात दोहे पढ़े जाते हैं।

छायानट पत्रिका में रामनगर रामलीला के दैनिक कार्यक्रमों के बारे में डॉ भानु शंकर मेहता लिखते हैं-

"नित्य सायं 5:00 बजे रामलीला आरंभ होती है। सूर्यास्त के समय रामलीला रुक जाती है। काशीनरेश संध्यावंदन करने चले जाते हैं। लगभग 6:45 से रात्रि 9:00 तक फिर लीला होती है। इसके बाद आरती होती है। मध्यावधि में लीला मेले का रूप धारण कर लेती है और चारों ओर साधु-संतों के कीर्तन और नामजाप से वातावरण गूंजता रहता है। संध्यावंदन करके जब महाराज लौटते हैं तो रामलीला आरंभ होती है।"[1]

कथा प्रसंग रामनगर काशी की रामलीला की प्रतिदिन की पुस्तिका में इस प्रकार है। प्रतिदिन रामलीला के मंचन के दृश्य का वर्णन छायानट पत्रिका के डॉ भानुशंकर मेहता द्वारा लिखित लेख को आधार बनाकर किया गया है-

पहले दिन- रावण जन्म और यज्ञ आदि।

दूसरे दिन- राम जन्म और विश्वरूप की झांकी।

तीसरे दिन - ताड़का वध, अहिल्या उद्धार, गंगादर्शन, जनकपुर पहुंचना।

चौथे दिन- फुलवारी, अष्टसखी संवाद, गिरिजापूजन, रामजानकी का प्रथम दर्शन।

पांचवें दिन- धनुष-यज्ञ, परशुराम संवाद और स्वरूपों की राजा जनक द्वारा आरती।

छठवें दिन- अवध में सूचना, अवध समाज का आना, बारात, विवाह और चारों दंपत्ति की आरती।

सातवें दिन - खिचड़ी भोज, विदाई, अवध-आगमन, शयन की झांकी और मां कौशल्या द्वारा आरती।

आठवें दिन- राम-भरत मिलन, दशरथ की चिंता, राज्याभिषेक की तैयारी, मंथरा की लीला, कोपभवन, राम-कौशल्या और राम-जानकी संवाद।

नवें दिन- वनलीला प्रारंभ होती है, राम की दशरथ से आज्ञा लेना, वल्कल वस्त्र धारण, निषादराज द्वारा आरती

दसवें दिन- राम गंगा पार करते हैं, भारद्वाज ऋषि से मिलते हैं, वाल्मीकि आश्रम आगमन आदि।

ग्यारहवें दिन - भरत आगमन, चित्रकूट की ओर प्रस्थान, निषाद-मिलन।

बारहवें दिन- भरत कुंभ के पास रहते हैं, लक्ष्मण का क्रोध, आकाशवाणी, भरत-मिलाप, दशरथ के मृत्यु की सूचना।

तेरहवें दिन- वशिष्ठ सभा और राजा जनक का आगमन होता है।

चौदहवें दिन भरत राज्याभिषेक का जल भरत-कूप में डालते हैं। पादुका स्थापित करके नंदीग्राम में निवास करते हैं।

पंद्रहवें दिन- राम सीता जी का पुष्प श्रृंगार करते हैं, जयंत चोंच मारता है, अत्रि आश्रम में अनुसूया जी सीता जी को उपदेश देती हैं, इंद्र आते हैं, अंत में गीता उपदेश और पंचवटी में सीता-राम की आरती लक्ष्मण करते हैं।

सोलहवें दिन- सूपनखा की नाक काटने का दृश्य, खर-दूषण वध, रावण-मारीच संवाद, सीता का अग्निप्रवेश, स्वर्णमृग, सीताहरण, जटायु से युद्ध, अशोक वाटिका में सीता बंदिनी के रूप में, राम का आश्रम में आना आदि।

सत्रहवें दिन- राम का विलाप, जटायु मोक्ष, शबरी मंगल, हनुमान मिलन, सुग्रीव मैत्री और सुग्रीव द्वारा आरती।

अट्ठारहवें दिन- बाली वध, मुद्रिका देना, हनुमान द्वारा सागर पार करने की तैयारी।

उन्नीसवें दिन- हनुमान समुद्र-सुरसा को पार करते हैं, लंकिनी वध, विभीषण से मिलते हैं, सीता-रावण संवाद, हनुमान-सीता संवाद, वाटिका उजाड़ना, हनुमान राक्षस युद्ध, मेघनाथ द्वारा बंदी बनाया जाना, रावण-हनुमान संवाद, लंका दहन, राम को सीता की अंगूठी देना।

बीसवें दिन- रामदल का प्रस्थान, विभीषण का निष्कासन, राजतिलक, सागर तट पर प्रार्थना, नल-नील द्वारा सेतु निर्माण, रामेश्वर मंदिर पूजन।

इक्कीसवें दिन- राम का सागर पार करना, सुवेल गिरी पर विश्राम, अंगद-रावण संवाद।

बाईसवें दिन- चारों फाटक की लड़ाई, लक्ष्मण-शक्ति, हनुमान द्वारा धौलागिरी उठाना, भरत-हनुमान संवाद, संजीवनी बूटी से लक्ष्मण का स्वस्थ होना।

तेईसवें दिन- कुंभकरण वध, मेघनाथ का नागपाश, यज्ञ करना और यज्ञ विध्वंस, मेघनाथ वध।

चौबीसवें दिन- राम-रावण युद्ध।

पच्चीसवें दिन- रावण के यज्ञ का विध्वंस।

छबीसवें दिन- यह दिन दशहरे का होता है, 2:00 बजे दशमी की सवारी निकलती है, गज पूजन के बाद राम का दर्शन, रावण वध और दाह-संस्कार।

सत्ताइसवें दिन- रात्रि में विभीषण का राजतिलक, सीता की अग्नि परीक्षा, इंद्र की अमृत वर्षा, हनुमान का अयोध्या आगमन।

अट्ठाईसवें दिन- भरत मिलाप की लीला और लोगों का अवध में आगमन।

उन्तीसवें दिन- रामनगर में दीपमालिका सजती है, राज्याभिषेक होता है, रात भर स्वरूप बैठते हैं, प्रातः काल आरती होती है, प्रातः महाराज पैदल राम के दर्शन के लिए आते हैं।

तीसवें दिन- रामबाग में सनक सनंदन की लीला होती है, पुरजनोपदेश होता है या लीला रामबाग की संगमरमर की बारादरी में होती है।

अंतिम दिन- हाथी पर बैठकर स्वरूप किले आते हैं, महाराज उनका पूजन करते हैं, उन्हें भोजन कराते हैं और विदा करते हैं।

ii) संवाद और भाषा संवाद बोलने में शुद्धता और मौलिकता का ध्यान रखा जाता है। पात्रों को अभिनय से पूर्व कई दिनों तक अभ्यास कराया जाता है। संवाद बोलने की शैली में नाटकीयता का पूरा ध्यान रखा जाता है। "अशोक वाटिका में जब सीता सुनती हैं कि राम की विजय नहीं हो रही है तो वह त्रिजटा से कहती हैं- हे माता यह मेरा अभाग्य है जो रावण को जिला रहा है, वही अभाग्य है जिसके चलते हरिचरणों से बिछोही हूँ, जिसने कपट मृग दिखाया वही दैव रावण को मरने नहीं देता।"[2]

इस दृश्य को देखकर प्रत्येक दर्शक भावविभोर होकर रोने लगते हैं। लक्ष्मण शक्ति के समय संवाद जहां करुण रस लिए हुए होते हैं तो वही मेघनाथ और रावण वध के समय संवाद ओजपूर्ण एवं क्रोध से भरे हुए होते हैं। रामनगर की रामलीला में प्रयोग की जाने वाली भाषा पूर्वी अवधी और बनारसी बोली होती है। सीता की भाषा में कभी-कभी मैथिली का प्रभाव दिखाई देता है। कभी-कभी भोजपुरी के शब्द भी सुनाई पड़ते हैं।

(iii) पात्र- राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और सीता को स्वरूप कहा जाता है। स्वरूप 10 वर्ष से 14 वर्ष के ब्राह्मण बालक होते हैं ये बालक लीला के दिनों में आश्रम में रहते हैं और वहीं पर पढ़ाई भी करते हैं। कई पात्र वंशानुक्रम में अभिनय करते हैं। सभी पात्रों में अभिनय और अपने कार्य के प्रति निष्ठा भक्ति-भावना के कारण उत्पन्न होती है।

(iv) वेशभूषा और मंच-सज्जा वेशभूषा दृश्यों के अनुसार होती है। राम लक्ष्मण जाने के पूर्व राजकुमारों के वस्त्र धारण करते हैं, मुकुट धारण करते हैं, कई हार और धनुष-बाण धारण करते हैं। वनवास में मुकुट पर काला धागा बांध दिया जाता है और वक्ष पर पीली अल्पी बांधते हैं। बंदरों की पोशाकें लाल, पीली, नीली, हरी होती है। राक्षस जामुनी काली पोशाक धारण करते हैं। राक्षसों में कुछ मुखौटा धारण न करके कर्नाटकी मुखसज्जा करवाते हैं। स्वरूपों के मुख पर चमकी से फूलपत्ती बनाते हैं, शरीर पर रामरज एवं चंदन का लेप लगाते हैं। रामायणी पीला साफा बांधते हैं और व्यास जी श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। सीता सुंदर बनारसी साड़ी और आभूषणों को धारण करती हैं। वनवास में भी सीता की साज सज्जा नहीं बदलती है।

मनुष्य से अलग पात्र मुखौटा धारण करते हैं, अभिनय के समय मुखौटा सिर के ऊपर या मुख के नीचे कर लेते हैं जिससे प्रतीत होता है कि मुखौटा एक प्रतीक है। रावण का मुखौटा जरीदार चमकीला है, नीचे नौ सिर हैं, ऊपर एक गधे का सिर है। यह मुखौटा काफी आकर्षक दिखाई पड़ता है। अन्य पात्रों के मुखौटे लकड़ी या पीतल के बने हुए होते हैं। हनुमान जी की वेशभूषा लाल रंग की होती है, अंगद की पीली और सुग्रीव आदि की नीली होती है। अधिकतर राक्षसों के वस्त्र काले होते हैं। रामनगर की लीला का श्रृंगार वास्तविक, मौलिक और दृश्यों पर आधारित होता है।

(v) अभिनय-स्थल- "रामनगर वाराणसी की रामलीला एक प्रमुख अभिनय स्थल है- रामबाग फाटक, गुलाब बाग, रामबाग तालाब, अवध भवन, अवध से पतली गली में होते हुए जनकपुर और पी.ए.सी. के सामने सड़क तक, जनकपुर और गिरजाबाग। अवध से प्रभु नारायण इंटर कॉलेज और जनकपुर तक बारात, अवध से वाराणसी जाने वाली सड़क पर वनगमन, तमसा तक, निषाद आश्रम यहां से गंगा यमुना पार करके रामबाग पिछवाड़े होते हुए वाल्मीकि आश्रम चित्रकूट, चित्रकूट से भरत का पादुका लेकर अवध आना और पास में स्थित हनुमान मंदिर नंदीग्राम में निवास करना। चित्रकूट से सुगत पोखरा, पंचवटी आगमन, पंचवटी से लंका, पंपासर, किष्किंधा टीला, अशोक वाटिका, रामेश्वर मंदिर सिंधु तालाब, सुवेल गिरी, किले में विभीषण का तिलक, रामनगर चौराहे पर भरत-मिलाप, अवध में राज्याभिषेक, संगमरमर की बारादरी और अंत में किले में कोट विदाई। पुराने समय में सुलोचना सती और अहिरावण वध लीला भी होती थी। रामनगर रामलीला में बारात के अलावा कोई शोभायात्रा नहीं होती है।"[3]

अंत में रामनगर रामलीला की कुछ प्रमुख विशेषताएं जान लेना आवश्यक है क्योंकि रामनगर की रामलीला सबसे चर्चित और प्रसिद्ध है। रामनगर की रामलीला की विशेषताओं को विद्वानों ने उद्घाटित करने का प्रयास किया है जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

1. रामलीला के समय वाराणसी में सैकड़ों साधु संत आते हैं और काशी के महाराज के अतिथि के रूप में निवास करते हैं।

2. यह रामलीला मैदान की लीला है जिसका लीला क्षेत्र 10 से 12 किलोमीटर में व्याप्त है। अलग-अलग लीलाओं के स्थान बनाए गए हैं। जैसे एक स्थान पर लंका बनाई गई है तो अयोध्या कहीं और है। पुष्पवाटिका एक बाग में होती है।

3. रामनगर के रामलीला की आरती प्रातःकाल होती है जो काफी प्रसिद्ध है।

4. रामनगर की रामलीला को देखने वाले दर्शकों को तीन भागों में बांटा गया है, पहले में नियम पूर्वक पूरे महीने श्रद्धा पूर्वक देखने वाले 'नेमी दर्शक', दूसरे अधिकतर लीलाओं को देखने वाले तथा विशेष रूप से आरती का दर्शन करने वाले 'प्रेमी दर्शक' तथा तीसरे यदा-कदा देखने वाले 'साधारण दर्शक'।

5. संगीत और नृत्य का रामनगर की रामलीला में अभाव दिखाई देता है। नारदवाणी में मानस पाठ किया जाता है।

6. रामनगर की रामलीला में क्षीरसागर की झांकी, फुलवारी, धनुष यज्ञ, लंका दहन, लक्ष्मणशक्ति, भरत मिलाप एवं राजगद्दी की रामलीला उल्लेखनीय है।

7. रामनगर की रामलीला में मुकुट का विशेष महत्व है। जो स्वरूप मुकुट धारण करते हैं उनका ईश्वर या देवत्व भाव के साथ श्रद्धालु दर्शन करते हैं। अंत में मुकुटधारण करने वालों को पूजन के बाद विदाई देकर विदा किया जाता है।

[ब] लाटभैरव की श्री आदि रामलीला (काशी) - काशी की प्राचीन रामलीलाओं में लाटभैरव वाली श्री आदि रामलीला अपना प्रमुख स्थान रखती है। कुछ विद्वान मानते हैं कि परंपरा से श्री आदि रामलीला का कुछ भाग काशी के उत्तर में स्थित लाटभैरव के फर्श या मैदान में होने के कारण इस रामलीला को लाटभैरव की 'श्री आदि रामलीला' कहा जाता है। यह भी संभव है कि पूर्व में कभी संपूर्ण रामलीला यहीं पर अभिनीत की जाती रही हो।

श्री आदि रामलीला की शुरुआत कैसे हुई इस संबंध में विश्वनाथ प्रसाद मिश्र अपनी पुस्तक गोसाईं तुलसीदास में लिखते हैं-

"पहले तुलसीदास हनुमान फाटक मुहल्ले के पास रहा करते थे। अतः संभावना है कि तुलसीदास ने प्रारंभ में रामलीला लाटभैरव नामक स्थान पर प्रवर्तित की हो कदाचित इसी से वह आदि रामलीला के नाम से विख्यात है। पुराण के अनुसार काशी के दो खंड हैं- काशी खंड और केदारखंड। चित्रकूट और लाटभैरव काशी खंड में पड़ते हैं और केदारखंड में अस्सी-भदैनी। इस प्रकार संभावना है कि वाराणसी के दो खंडों में से काशी खंड में दो रामलीलाएँ पास-पास चल रही हों। फिर जब वे केदारखंड के अस्सी-भदैनी नामक स्थान पर जा बसे तो वहां भी रामलीला का प्रवर्तन किया। हो सकता है कि चित्रकूट की रामलीला और लाटभैरव की रामलीला कभी एक ही रामलीला से पृथक होकर दो हो गई हों। आरंभ में वाल्मीकि रामायण के आधार पर रामलीला होती रही होगी, फिर तुलसीदास के मानस के अनुसार रामलीला चलाई गई होगी, इसी से उसे आदि रामलीला कहते हैं।"[4]

कुछ विद्वान मानते हैं कि मेघा भगत (1543ई०) ने लाटभैरव की श्री आदि रामलीला शुरू की। यह भी संभव है कि शुरुआत में श्री आदि की रामलीला का कथास्रोत वाल्मीकि रामायण रहा हो परंतु बाद में मेघा भगत ने लाटभैरव की रामायण का आधार रामचरितमानस को बना दिया। चित्रकूटधाम काशी की रामलीला और लाटभैरव की रामलीला की पद्धति का भी समान है। श्री आदि रामलीला नाम होने के कारण इसे सर्वाधिक प्राचीन मान लेना न्यायोचित नहीं लगता। इसके बावजूद श्री आदि रामलीला और चित्रकूटधाम काशी की रामलीला में एक ही दिन भरत मिलाप होता है और दोनों लीलाओं में भरत-मिलाप को महत्वपूर्ण माना जाता है। दोनों लीलाओं में प्रचलित है कि स्वरूपों में ईश्वर के दर्शन प्राप्त होते हैं। इन समानताओं के अतिरिक्त चित्रकूटधाम काशी की रामलीला और श्री आदि रामलीला का कार्यक्रम एक समान होता है।

लाटभैरव की रामलीला के प्रदर्शन के तथ्यों और प्रसंगों का विवरण इस प्रकार है”[5]-

(i) कथा-स्त्रोत/कथावस्तु- श्री आदि रामलीला की अवधि 20 दिनों तक होती है। रामलीला आश्विन मास कृष्ण नवमी से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल षष्ठी को संपन्न होती है। लाटभैरव रामलीला में तिथियों का विशेष ध्यान रखा जाता है। लाटभैरव की रामलीला त्रयोदशी के बाद बीच में लगभग 20 दिनों तक बंद फिर से 2 दिन होती है। लाटभैरव की रामलीला के प्रदर्शन के तथ्यों और प्रसंगों का विवरण इस प्रकार है-

रामलीला का प्रारंभ मुकुट पूजन के साथ होता है। राम के 14 वर्षों के वनगमन को 14 दिन की रामलीला के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। प्रथम दिन राज्याभिषेक की तैयारी, कोपभवन, वनगमन, निषाद-मिलन, राम-घड़इल, कोल-भील लीला प्रदर्शित की जाती है। कोल-भील लीला काशी की अन्य रामलीलाओं से विशिष्ट है। राम, सीता और लक्ष्मण लाटभैरव की फर्श पर उत्तर की ओर से आते हैं वहीं दूसरी ओर से कोल-भील साधारण पोशाक में फर्श पर आते हैं। कोल-भील राम, लक्ष्मण और सीता से भेंट कर उन्हें फल आदि खिलाते हैं। इसके बाद रामचरितमानस का पाठ समाप्त होता है और स्वरूप रामायणियों के साथ रामबाग जाते हैं जहां पर समापन और आरती होती है। रामलीला के अगले दिन आश्विन शुक्ल द्वितीया को दशरथ-मरण, भरत-वशिष्ठ संवाद, राम-घड़इल, भरत-मनावन, भरत-सभा, जनक-सभा, इसके बाद की रामलीला को भरत की लीला के नाम से जाना जाता है।

लाटभैरव फर्श पर भरतकूप की लीला संपन्न होती है, भरत के द्वारा कूप में जल डालने के पश्चात भरत शत्रुघ्न के साथ लाटभैरव का पूजन करते हैं। भरत-विदाई की लीला में प्रभु राम द्वारा अपनी पादुका भरत को देना और भरत के द्वारा उसे अपने मस्तक पर धारण करना प्रमुख दृश्य है। इसके बाद नंदीग्राम की झांकी जिसमें राम की पादुका का पूजन होता है, लाटभैरव पर संपन्न होती है।

जयंत-नेत्रभंग, अत्रि-मिलन, अनुसुइया संवाद की लीला लाटभैरव पर अभिनीत की जाती है एवं यहीं पर एक वृक्ष के नीचे राम लक्ष्मण और सीता का एक साथ बैठा होना मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करता है। शूर्पणखा-नासिका छेदन की लीला रामगंज में आयोजित की जाती है। एक प्रसंग यहां पर सबसे उल्लेखनीय है कि शूर्पणखा बनने वाला पात्र भोला 70 वर्ष का है जो काशी की सभी रामलीलाओं में बचपन से शूर्पणखा का किरदार करता आ रहा है। वे शूर्पणखा का मुखौटा पहनने से पूर्व उसकी पूजा करते हैं और नासिका-छेदन के बाद निकलने वाला खून दर्शकों पर छिड़क देते हैं जो लीला में हास्य का विषय हो जाता है। इसके बाद खर-दूषण वध, सीताहरण, कबंध-वध, सेवरी-मंगल, सुग्रीव-मिताई, बालि-सुग्रीव युद्ध, बालि-वध, सीता की खोज के लिए प्रयास, सुरसा मिलन, लंका दहन, सेतुबंध, सुवेल गिरी की झांकी, अंगद विस्तार, चारों फाटक की लड़ाई, लक्ष्मणशक्ति, कुंभकरण-वध, मेघनाथ वध, रावण वध, सीता अग्नि-प्रवेश, देवस्तुति आदि का मंचन किया जाता है। अगले दिन रात्रि 10:00 बजे भरत-मिलाप की लीला होती है। भरत-मिलाप की लीला का चित्रकूट धाम की रामलीला के भरत मिलाप की तरह विशेष स्थान है। अंतिम 2 दिन की लीला 15 दिन बाद पूर्ण की जाती है। लीला के अंतिम चरण में राम का चरण दबाते हुए भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न को दिखाया जाता है। लाटभैरव की लीला का समापन व्यास के द्वारा राम दरबार की आरती के साथ होता है।

(ii) संवाद- लाटभैरव की रामलीला में संवाद बहुत कम होते हैं। मानस का पाठ किया जाता है। लीलाएं पाठ और संवाद में विभाजित होती हैं। मानस का पाठ करने वाले सफेद धोती-कुर्ता, टोपी और तिलक लगाते हैं। इनके हाथ में ढोल-मंजीरे, मानस की छोटी-छोटी प्रतियां, ढोलक आदि होता है। श्री आदि की रामलीला में संगीतात्मकता और मधुरता नहीं है। मानस की चौपाइयों के आधार पर गद्य संवादों का भी प्रयोग किया जाता है इसके अतिरिक्त केशव की रामचंद्रिका, रघुराज सिंह के रामस्वयंवर और दिव्य जी के रामलीला सहायक छंदों का भी भरपूर प्रयोग होता है। अंगद रावण संवाद में रामचंद्रिका के अंगद-रावण संवाद से बहुत से छंद लिए जाते हैं, स्वयंवर और धनुष-भंग में रामस्वयंवर का प्रयोग होता है। गद्य संवादों की भाषा बनारसी पुट लिए हुए खड़ी बोली है।

(iii) पात्र लाटभैरव की रामलीला के पात्र भी 10 से 12 वर्ष की आयु वाले बालक होते हैं। स्त्री पात्र की भूमिका भी पुरुष पात्र ही निभाते हैं। ज्यादातर स्वरूप ब्राह्मण घरों से लिए जाते हैं।

(iv) वेशभूषा- स्वरूपों के श्रृंगार में श्रृंगारिया का महत्वपूर्ण स्थान होता है। श्रृंगार में रामरज, चंदन एवं तुलसी की माला की प्रधानता रहती है। राज्याभिषेक के अवसरों पर श्रृंगार भव्य होता है तो वनगमन के समय श्रृंगार सादा और साधारण होता है। स्वरूप वस्त्रों के रूप में धोती-कुर्ता एवं बनारसी जरी वाले कोट का प्रयोग होता है। सीता बनारसी साड़ी पहनती हैं। रामलीला के अन्य पात्र मुखौटों का प्रयोग करते हैं। रावण का 10 मुखों वाला मुखौटा एवं बीस भुजाएँ विशिष्ट प्रकार की होती हैं।

(v) अभिनय-स्थल-लाटभैरव की रामलीला काशी की अन्य लीलाओं की तरह एक स्थान पर न होकर बड़े क्षेत्र के अंतर्गत अलग- अलग स्थानों पर अभिनीत की जाती है जो विशेश्वरगंज से लेकर वरुणा तट तक फैला है। लीला के स्थल विशेश्वरगंज, अंबिया मंडी, हनुमान फाटक, धनेसरा तालाब, तेलियाना, लाटभैरव फर्श, रामबाग, इमामबाड़ा-सरैया, कोनिया, योगीवीर किला, पठानी टोला, भदऊ, राजघाट, गायघाट, जतनबर, धनेसरा मठ हैं। इनमें अधिकांश स्थल रामलीला की अपनी भूमि है। यही कारण है कि रामलीला के स्थल का प्राकृतिक स्वरूप आज भी मौजूद है।

मुकुटपूजन और आरती धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण है। स्वरूपों पर श्रद्धालु चढ़ावा चढ़ाते हैं। प्रत्येक दिन स्वरूपों की पूजा होती है। राज्याभिषेक के 15 दिन बाद जो दो दिन की उपदेशात्मक रामलीला होती है वह नाटक प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण न होकर धार्मिक रूप में अधिक महत्वपूर्ण है।

संदर्भः

1. वर्मा, केशवचन्द्र, छायानट पत्रिका, अंक 58, जुलाई-सितंबर 1991, पृष्ठ 20

2. अवस्थी, इंदुजा, रामलीला परंपरा और शैलियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 1979, पृष्ठ 87

3. प्रो कमल गिरी एवं डॉ नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी, काशी की रामलीला एक एल्बम, अयोध्या शोध संस्थान अयोध्या, 2012, पृष्ठ 126

4. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ 34

5. अवस्थी, इंदुजा, रामलीला परंपरा और शैलियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 1979, पृष्ठ 94

आशुतोष

शोधार्थी (पीएच.डी.)

हिंदी-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय